वर्षा ऋतु में पशुओं का प्रबंधन एवं रोगों से बचाव

सविता कुमारी[1], अजय[2] एवं पुरुषोत्तम कौशिक[3]

"पशुपालन भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह किसानों को रोजगार एवं आय के माध्यम से सामाजिक तथा आर्थिक उत्थान देने के साथ-साथ लाखों लोगों के लिए सस्ते पोषक आहार भी उपलब्ध कराता है। पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य एवं उत्पादन में कुशल प्रबंधन का बहुत योगदान है। कुशल प्रबंधन पशुओं के स्वास्थ्य को उन्नत बनाता है, रोगों से बचाता है और रोगों के फैलाव दूसरे पशुओं में रोकता है, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पशुओं के बेहतर उत्पादन में सहायक है तथा कृषकों के आर्थिक उत्थान में मददगार है।"

भारत वर्ष में कई ऋतुएँ हैं और इन ऋतुओं के अनुरूप पशुओं की देखभाल एवं प्रबंधन में बदलाव लाकर पशुपालन को लाभकारी बनाया जा सकता है। वर्षा ऋतु में बारिश के कारण अचानक मौसम में बदलाव, पशुओं में तनाव के कारण रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी, उच्च ताप के साथ आद्रता से कई सूक्ष्म जीवों के पनपने के कारण तथा रोग बढ़ाने वाले वाहकों यथा मच्छर, मक्खी, पिस्सू, चमोकन, कुटकी इत्यादि की संख्या में वृद्धि के कारण पशुओं में संक्रामक, फफूंद जनित, कृमि जनित एवं अन्य बिमारियों के होने की संभावना बढ़ जाती है। बारिश के पश्चात् गीले एवं कीचड़ युक्त जमीन पर पशुओं के लगातार रहने से थनैला, पैरों का संक्रमण आदि रोगों में भी वृद्धि हो जाती है। वर्षा ऋतु में बीमार पशुओं से वातावरण में भी संक्रमण बढ़ जाता है, जो अन्य स्वस्थ्य पशुओं में बीमारी फैला सकता है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए निम्न वर्णित विभिन्न प्रबंधन कार्यों से पशुओं को स्वस्थ्य रखा जा सकता है।

[1]सहायक प्राध्यापक–सह–कनिय वैज्ञानिक, सूक्ष्म विज्ञान विभाग
[2]सहायक प्राध्यापक–सह–कनिय वैज्ञानिक, पशुजन स्वास्थ्य विभाग
[3]सहायक प्राध्यापक–सह–कनिय वैज्ञानिक, पशुपोषण विभाग
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना

(1) पशुओं के रहने के स्थान का बेहतर रख–रखाव

- पशुओं के रहने की जगह आस–पास के जमीन से थोड़ी ऊँची होनी चाहिए, ताकि वर्षा के पानी को बहने के लिए सतह को थोड़ा ढालू बनाया जा सके।
- फर्श कीचड़ रहित, फिसलन मुक्त तथा यथासंभव सूखा रहना चाहिए।
- गड्ढे आदि में जल–जमाव नहीं होना चाहिए, अन्यथा मच्छर पनपने की संभावना रहती है।
- बरसात के पूर्व ही छत की मरम्मत करा लेनी चाहिए ताकि पशु के रखने की जगह पर पानी नहीं टपके। ठण्डी हवा एवं वर्षा के पानी से बचाव पशुओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता को दुरूस्त रखता है।

पशु चिकित्सक के परामर्शानुसार नियमित अंतराल पर पशुओं के शेड में मच्छर एवं अन्य कीटों को मारने हेतु उचित कीटनाशक का छिड़काव करना चाहिए।

- प्रायः शेड के फर्श तथा दीवारों के दरारों एवं छिद्रों में जूँ, चमोकन एवं कुटकी (माइट्स) छिपे होते हैं, अतः फर्श एवं दीवारों को रगड़ कर नियमित सफाई करनी चाहिए। मकड़ी के जालों को नियमित साफ करना चाहिए।
- पशुओं के खाने–पीने का बरतन/नाद की नियमित सफाई करनी चाहिए।

(2) खाद्य सामाग्रियों का उचित प्रबंधन

- बरसात के पूर्व ही उचित मात्रा में पशुओं हेतु खाद्य–सामाग्रियों का संचय कर लेना चाहिए, ताकि वर्षा ऋतु में परिवहन के दौरान खाद्य–सामाग्रियों को नमी सोंखने से बचाया जा सके। नमी बढ़ने से फफूँदी लगने की संभावना बढ़ जाती है, जो फफूँदी तथा इनसे उत्पन्न विषों के कारण कई बिमारियों को जन्म देते हैं।
- वर्षा ऋतु में खाद्य–सामाग्रियों को नमी रहित स्थान पर जमीन से ऊँचे सतह पर दीवार से दूर रखना चाहिए, ताकि बारिश के पानी से इन्हें बचाया जा सके।
- एक छोटी–सी देखभाल और उचित खाद्य–भंडारण खाद्य–विकृति को दूर रख सकता है।

(3) पशुओं हेतु शुद्ध एवं साफ पीने के पानी की व्यवस्था

- पशुओं हेतु शुद्ध एवं साफ संक्रमण रहित पीने के पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- पशुओं के मल–मूत्र एवं अन्य अपशिष्टों से पानी को संक्रमित होने से बचाना चाहिए।

(4) अपशिष्ट का प्रबंधन

- पशुओं के मल–मूत्र एवं बाड़े के अन्य अपशिष्टों का रोगों के फैलाव में महत्वपूर्ण योगदान है, अतः पशुओं के रहने के स्थान पर मल–मूत्र एकत्रित नहीं रहना चाहिए।
- अपशिष्ट के निष्कासन हेतु उचित सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए, अन्यथा मानसून में इन स्थानों पर मच्छर, मक्खी एवं अन्य कीटों का प्रजनन बढ़ जाता है, जो कई रोगों के वाहक हैं।

(5) पशुओं का स्वास्थ्य प्रबंधन

पशुओं की उत्पादकता में कुशल प्रबंधन एवं रोग नियंत्रण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। बिमारियों के कारण पशुओं के उत्पादन एवं उत्पादन क्षमता का ह्रास होता है, जिससे पशुपालकों को काफी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। पशुओं के बीमार होने के कई कारण हैं, किन्तु वर्षा ऋतु के दौरान उच्च ताप के साथ नमी विषाणुओं, जीवाणुओं, अंतः वाहय परजीवियों तथा रोग वाहक कीटों की वृद्धि हेतु अनुकूल वातावरण प्रदान करता है, जो कई तरह के बिमारियों के मूल कारण हैं। इस ऋतु में पशुओं को सालमोनेलोसिस, कोलीबैसीलोसिस, गलाघोंटू, लंगड़ा रोग, एन्थ्रैक्स, खुरपका –मुँहपका रोग, थनैला, एफीमेरल फीवर, पैरों का संक्रमण, टीक पैरालिसिस, भेड़–बकरियों में पीपीआर, गला–घोंटू एवं एन्टेरोटॉक्सेमिया सहित अन्य बिमारियॉ हो सकती हैं। इनमें से अधिकांश बिमारियों के फैलाव में दूषित भोजन, पानी, वातावरण तथा संक्रमित मल–मूत्र एवं अन्य उत्सर्जन महत्त्वपूर्ण हैं। कुछ रोगों (गला–घोंटू, लंगड़ा रोग, खुरपका–मुँहपका रोग, एन्थ्रैक्स, पीपीआर, एन्टेरोटॉकसेमिया) से बचाव हेतु बरसात से पूर्व पशुचिकित्सक के परामर्श अनुसार पशुओं में टीकाकरण करवाना चाहिए, जबकि अन्य बिमारियों के रोकथाम हेतु उचित प्रबंधन एवं देखभाल आवश्यक है। निम्न वर्णित उपायों को अपनाकर पशुओं को विभिन्न रोगों से बचाया जा सकता है –

- पशुओं को खनिज मिश्रण युक्त संतुलित आहार देना चाहिए।
- वर्षा ऋतु में पशुओं को अत्यधिक श्रम वाले कार्यो में नहीं लगाना चाहिए, यथासंभव पशुओं को तनाव –मुक्त रखें।
- चोट एवं घाव का तत्काल उपचार करना चाहिए।
- पशुचिकित्सक के परामर्शा के अनुसार, वर्षा ऋतु के पूर्व एवं पश्चात् पशुओं को कृमिनाशक दवाएँ देना चाहिए।
- पशुओं का नियमित टीकाकरण कराना चाहिए। जूँ, चमोकन, कुटकी, मक्खी, मच्छर इत्यादि कीटों से बचाव हेतु पशुचिकित्सक के सलाह के अनुसार समय–समय पर पशुओं को उचित कीटनाशक एवं मक्खी– मच्छररोधी दवाओं से उपचारित करना चाहिए, ताकि पशुओं को सर्रा, बेबेसिया, एनाप्लाजमोसिस, थिलेरिया, टीक पैरालिसिस, एनिमिया, एफीमेरल फीवर, ब्लूटंग वायरल इत्यादि बिमारियों से बचाया जा सके।
- पशुओं के आसपास के वातावरण को साफ रखके तथा पशुओं के थन को कीचड़ एवं गोबर के संक्रमण से बचाकर, थनैला रोग की संभावना को कम किया जा सकता है।
- वर्षा ऋतु में पशुओं को पानी के स्रोत जैसे तालाब, कैनाल आदि के निकट स्थानों पर चरने नहीं देना चाहिए, क्योंकि उन स्थानों पर परजीवी रोग कारक वाहकों की होने की संभावना होती है।
- बीमार पशुओं का अलगाव कर तत्काल समुचित उपचार करना चाहिए। संक्रमित अपशिष्टों का विसर्जन उचित विधि से तथा पशुओं से दूर स्थान पर करना चाहिए।
- संक्रामक रोग होने की स्थिति में बाड़े के फर्श को 2 प्रतिशत कास्टिक सोडा से धोकर संक्रमण रहित करना चाहिए।

स्वस्थ पशु ही सुरक्षित एवं पौष्टिक खाद्य प्रदान कर सकते हैं। अतः यह जरूरी है कि पशुओं को समुचित पोषण देने के साथ–साथ रोग, बारिश, नमी, हवा इत्यादि पर्यावरणीय कारकों का भी मूल्यांकन पशुओं के प्रबंधन एवं भलाई के लिए किया जाना चाहिए। तभी पशुपालन व्यवसाय को सुदृढ़ बनाकर पशुपालक अपने सामाजिक एवं आर्थिक विकास को सुनिश्चित कर सकते हैं।